भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार ...

Model Answer Key

Date : 12/05/2019

1. पारदर्शिता के प्रशासन में निम्नलिखित लाभ है–

(a) भ्रष्टाचार को नियंत्रण करने में।

(b) लालफीताशाही को नियंत्रण करने में।

(c) सुशासन, लोकतंत्र की स्थापना हेतु।

2. प्लेटो यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक थे, इन्होंने मनुष्य की तीन प्रवृत्तियों को बताया–

1. लालसा – उत्पादक वर्ग
2. साहस – सैनिक वर्ग
3. बुद्धि – शासक

3. वस्तुनिष्ठता–

– निर्णय करते समय व्यक्तिगत चेतना से मुक्त होकर तर्क व साक्ष्य के आधार पर निर्णय करना ही वस्तुनिष्ठता हैं।

– इससे न्यायिक समता स्थापित की जा सकती है।

– भेदभव के उन्मूलन में सहायक।

4. नैतिक मूल्य

– जिन मूल्यों के आधार पर कार्यो के सही, गलत या शुभ–अशुभ होने का मूल्यांकन करते है, नैतिक मूल्य कहलाते है।

यथा– सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व, वस्तुनिष्ठता इत्यादि।

5. दया मृत्यु का सिद्धांत

– गांधी जी ने अहिंसा संबंधी विचारों में कहा था कि यदि कोई प्राणी असहनीय पीड़ा सहन कर रहा है और पीड़ा दूर करने का और कोई रास्ता नहीं है तो उसकेजीवन को नष्ट कर देना चाहिए इसे ही दया मृत्यु का सिद्धांत कहते है।

1. Role of Transperancy in administration ?

(a) In controlling corruption.

(b) In controlling redtapism.

(c) Good governance & establishment of democracy.

2. Nature of human's according to Plato ?

(a) Desire - Producing Class

(b) Courage - Soilder Class

(c) Intelligence - Ruling Class

3. Objectivity -

- While taking a decision freeing yourself from any king of personal bias and taking a decision based only on facts is known as objectivity.
- This can eradicate any kind of discrimination in society.

4. Moral Values

- Moral Values are set of principles guiding us to evaluate what is write are wrong.
- MoralValues help shape the character and personality of individuals.

5. Principle of Mercy killing

- Accroding to Gandhiji if a person is in unbearable pain and if there is no other way to stop this pain then it is not wrong to destroy the pain by relieving him of his pain this is known as the principle of Mercy Killing.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

6. 'The problem of Rupee'- नामक ग्रंथ के लेखक भीमराव अम्बेडकर हैं, और अपने आर्थिक संबंधी विचार इसी ग्रंथ में प्रस्तुत किये है।

7. अभिक्षमता की तीन विशेषताएं निम्न. है–

(a) यह जन्मजात व अर्जित दोनों प्रकार की होती है।

(b) यह भविष्य की क्षमताओं को प्रदर्शित करती है।

(c) किसी विशेष कार्य करने की उपयुक्ता को प्रदर्शित करती है।

8. आचरण किसे कहते है ?

– मनुष्य अपने दैनिक जीवन में जिस प्रकार व्यवहार करता है, जो उसके व्यक्तित्व को प्रदर्शित करता है, उसे उसका आचरण कहते है।

9. बौद्ध दर्शन के चार आर्य सत्य निम्न. है–

(i) संसार दुःखमय है।

(ii) दुःख का कारण है।

(iii) दुःख का निरोध संभव है।

(iv) दुःख निरेध का मार्ग है।

10. करूणा क्या है ?

– वंचित वर्गो व कमजोर वर्गो की स्थिति को देखकर हृदय में जो दया की भावना उत्पन्न होती है उसे करूणा कहा जाता है।

– करूणा की भावना से लोकसेवक वंचित वर्गो को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने का प्रयास करेगा।

11. लोकसेवक के कार्य निम्नलिखित है–

(i) अर्द्धन्यायिक कार्य।

(ii) नीति नियोजन संबंधित कार्य।

(iii) परामर्श देना।

(iv) नीतियों को क्रियान्वित करना।

6. The problem of Rupee.

- It is a book written by Bhim Rao Ambedkar in which he has articulated his economic views.

7. Three feature of aptitude -

(a) It is innate as well as acquired.

(b) Aptitude can sometimes display the ability of the future.

(c) Aptitude can also display talent towards a very specific field.

8. Conduct

- The manner in which a person acts in is daily life shows his conduct and also tells us about his personality.

9. Four Nobel Truth of Buddhism -

(i) The truth of suffering (dukkha).

(ii) The truth of the origin of suffering (Samudaya)

(iii) The truth of the path to the cessation of suffering (Nirodha)

(iv) The truth of the path to the cessation of suffering (Magga)

10. Compassion

- Compassion is a desire to alleviate or reduce the suffering of another, and when appropriate to show kindness.

- With the help of compassion a public servant can batter serve the backward and the weaker section.

11. Function of Public Servant are as follows -

i. Quasi judicial functions

ii. Function related to policy formulation

iii. Advisary functions

iv. Execution of Policy

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY
INDORE

12. नैतिक संहिता

1. नैतिक संहिता में कार्यो के सही–गलत का मूल्यांकन किया जाता हैं।
2. नैतिक संहिता सब के लिए समान होती है।
3. नैतिक संहिता स्थाई होती है।

आचरण संहिता

1. आचरण संहिता के स्वीकृत व अस्वीकृत कार्य व्यवहार की सूची है।
2. आचरण संहिता प्रत्येक विभाग की भिन्न–भिन्न होती है।
3. आचरण संहिता परिवर्तनशील होती है।

13. जब मनोवृत्ति के तीन संघटक तत्वों में से एक सकारात्मक तथा एक नकारात्मक होती है तो इसे मनोवृत्ति द्वैधीभाव कहा जाता है।

14. **The Hidnu** के लेखक राष्ट्रपिता महात्मा गांधी है। इसे पुस्तक में आपने वर्ण संबंधि विचार प्रतिपादित किया है।

15. **The politic** के लेखक अरस्तू जिसमें आपने राजनीति संबंधी विचार प्रस्तुत किये।

12. Moral code

1. In Moral code actions are divided into right and wrong
2. Moral code is similar for everyone
3. Moral code is permanent

Code of Conduct

1. Code of conduct is a list of actions some of which are approve and some of which are not approved.
2. Code of conduct can be different for different departments.
3. Code of conduct is not permanent and keeps on changing.

13. Ambivalance of attitude.

- Ambivalence is a state of having simultaneous conflicting reactions, beliefs, or feelings towards some object. Stated another way, ambivalence is the experience of having an attitude towards someone or something that contains both positively and negatively valenced components.

14. The writer of the book The Hindu is The Father of Our Nation Mahatma Gandhi.

    In this book Gandhi Ji has articulated his views on the varna system.

15. The writer of the book the politic is Artistotle in this book Aristotle has articulated his views on politics.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY
INDORE

6 Marks

1. राजा राममोहन राय को भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत कहा जाता है। आपका जन्म 22 मई, 1772 को बंगाल में हुआ था। ब्रिटेन की यात्रा के दौरान तेज बुखार के कारण 27 सितम्बर, 1833 को आपका निधन हो गया।

सामाजिक सुधार आंदोलन में आपके निम्नलिखित योगदान हैं–

(i) मूर्ति पूजा का विरोध।

(ii) जाति प्रथा का विरोध।

(iii) सती प्रथा का विरोध।

आपका मानना था कि, मूर्ति पूजा का कारण यह है कि, भक्तों को इसका कोई वास्तविक लाभ नहीं मिलता बल्कि केवल अंधी श्रृद्धा समर्पित करना होता है। इसलिए आप मूर्ति पूजा का निषेध करके वेदांत को स्वीकार करते थे।

आर्यो ने कर्म के आधार पर समाज को वर्णो में विभाजित किया था, जो कि सामाजिक कार्यप्रणाली की एक इकाई थी। लेकिन कालांतर में यह जाति व्यवस्था में परिवर्तित हो गई जिसके विनाशकारी परिणाम प्राप्त हुए। इसलिए आप जाति व्यवस्था का घोर विरोध करते थे और किसी भी आधार पर भेदभाव को स्वीकार नहीं करते थे।

आपका मानना था कि, विश्व के प्रत्येक धर्म में नारी को समान अधिकार प्राप्त है और मनुष्यों को कोई अधिकार नहीं है कि वह नारी के अधिकारों को हनन करें। तत्कालीन समय में चली आ रही सती प्रथा के उन्मूलन हेतु आप के अथक प्रयास किए और 1829 में विलियम बेटिंग की सहायता से सती प्रथा को गैर कानूनी घोषित कराया।

अतः उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि, आपके विचारों का समाज सुधार में बहुत की महत्वपूर्ण स्थान है।

(1) Popularly known as the "Maker of Modern India" and "Father of Modern India", Raja Ram Mohan Roy, a social and educational reformer, was an idealist who contributed immensely in eradicating social evils prevalent in the society during the 18th century.

Raja Ram Mohan Roy was born into an elite Bengali Hindu family on May 22, 1772, in Radhanagar village of Hoogly district, Bengal Presidency.

He was against traditional Hindu practices and echoed his voice against Sati system, polygamy, caste rigidity and child marriage. His biggest achievement was the prohibition of the "sati pratha", a practice in which a widow was made to immolate herself at the funeral pyre of her deceased husband. He struggled for years to get this evil legally eradicated.

He established the Brahmo Samaj along with the other enlightened Bengalis. The samaj was a highly influential socio-religious reform movement which raised its voice against evils like caste system, dowry, ill-treatment of women, etc.

He put remarkable efforts in the education system of India. To modernize the education system, Raja Ram Mohan Roy established many English schools. He revolutionized the education system in India by setting up Hindu College at Calcutta in 1817

Roy even published magazines in different languages. Noticeable magazines published by him were the Brahmanical Magazine, the Sambad Kaumudi, and Mirat-ul-Akbar.

2. **प्लेटो के न्याय सिद्धांत की व्याख्या–**

प्लेटो का The Republic नामक ग्रंथ राजनीति शास्त्र के इतिहास में आदर्शवाद पर लिखाा गया। प्लेटो अभी तक के दार्शनिकों में पहला ऐसा दार्शनिक था जिससे आदर्श राज्य की परिकल्पना की जिसमें से न्याय को सबसे महव्वपूर्ण माना।

(2) Plato'stheory of justice quite different from and contrary to the justice as we understand it in constitutional-legal terms, can be precisely summed in following two quotes from the Republic: "Justice is having and doing what is one's own"and "A just man is a man just in the right place doing his best and giving full equivalent of what he receives".

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

सामान्यतः न्याय का अर्थ अदालत या न्यायालय द्वारा दिये जाने वाले न्याय से नहीं है, बल्कि प्लेटो के न्याय का अर्थ नैतिकता की अच्छाई से है।

प्लेटो ने यह महसूस किय कि उस समय के सभी सिद्धांत व व्यवस्था राज्य की अराजकता और अव्यवस्था को दूर करने में असमर्थ है।

प्लेटो के अनुसार– न्याय बाहरी या कृत्रिम वस्तु नहीं है, बल्कि आंतरिक वस्तु है। न्याय शरीर का अविभाज्य अंग है। इस प्रकार न्याय राज्य का केवल एक गुण ही नहीं बल्कि उसकी आत्मा है।

अपने न्याय के सिद्धांत को प्रतिष्ठित करने के लिए प्लेटों ने मनुष्य की प्रवृत्तियों का अध्ययन किया और उसने पाया कि प्रत्येक मनुष्य की प्रवृत्तियां अलग–2 होती है। अतः मनुष्य को अपनी प्रवृत्ति के अनुसार ही कार्य करने चाहिए। प्लेटो के अनुसार मनुष्य की तीन प्रवृत्तियां होती हैं – लालसा, साहस, बुद्धि।

प्रत्येक व्यक्ति में एक प्रवृत्ति मुख्य होती है तथा अन्य प्रवृत्तियों गौण होती है। मनुष्य को प्रवृत्तियों के आधार पर 3 भागों में बांटा गया है–

1. उत्पादक वर्ग 2. सैनिक वर्ग 3. शासक

उत्पादक वर्ग की प्रवृत्ति लालसा होती है, सैनिक वर्ग की प्रवृत्ति साहस होती है तथा शासक वर्ग की प्रवृत्ति बुद्धि और तर्क होती है।

जिसमें से शासक तथा सैनिक वर्ग को संयुक्त रूप से संरक्षक कहा जाता है। अतः सभी प्रवृत्ति वाले मनुष्य अपने–अपने कार्यो को करें तथा कोई भी वर्ग दूसरे वर्ग कार्यो में हस्तक्षेप न करें वही न्याय है।

3. राधाकृष्णन जी के नव वेदांत–

– राधाकृष्णन जी का जन्म 5 सितम्बर, 1888 को वर्तमान मद्रास में हुआ था। आप भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति तथा दूसरे राष्ट्रपति बनाये गए और 17 अप्रैल, 1975 को लम्बी बीमारी के कारण आपका निधन हो गया।
आपके नव वेदांत को निम्न. व्याख्या के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–
चूंकि राधाकृष्णन पर शंकराचार्य के अद्वैतवाद का प्रभाव था, लेकिन आप अंधविश्वासी नहीं थे। आपका मानना था कि ब्रह्मा सत्य है, शाश्वत है तो सत्य की अभिव्यक्ति जगत व जीव असत्य कैसे हो सकता है? अर्थात् जगत व जीव ही सत्य होता है। आपके इसी सिद्धांत को नव–वेदांत के नाम से जाना गया।

The central concern of Plato in Republic is justice, as is obvious from the subtitle of the text, "A treatise concerning justice". It begins with the question of justice and concludes with the answer that justice lies in the harmonious, hierarchal well-ordering of society. Platonic concept of justice is not based on equality of humankind but just opposite of it. It is not equality but the harmonious, well-ordering that institutionalizes the inequality.

For the definition of justice, Plato theoretically creates the Ideal State, TheIdeal State of Plato's Republic was a plea for a desirable alternative to the existing democratic government, which he considered government of fools and"vowed to destroy.

(3) Radhakrishnan is often described as one of the greatest messengers of Hinduism who propagated the essence of our religion to the west. He believed strongly that our religion alone preserved our culture despite the diversity of the nation.

He enunciated a new idea of Vedanta that makes it more significant and extremely relevant to human sojourn. It was 'Neo-Vedanta

hat is Neo-Vedanta? It goes by different names like Hindu Modernism, Neo-Hinduism and Global-Hinduism. It is the pointed exploration of Hinduism with the aid of 19th century scholarship and an interpretation that has given it the attribute of universalism

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY INDORE

राधाकृष्णन के नव वेदांत में पूर्व तथा पश्चिम के दर्शन में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया गया। अनेक अध्ययन के उपरांत आपने देखा कि पश्चिमी दर्शन शास्त्र, वैज्ञानिक ज्ञान व बुद्धि पर अत्यधिक जोर देते हैं, जो भौतिक विकास के लिए आवश्यक है। वहीं पूर्व के दर्शन धर्म पर अत्यधिक जोर दिया जो अध्यात्मक के विकास के लिए आवश्यक है। लेकिन दोनों एकांगी है इसलिए पूर्व के दर्शन में पश्चिमी दर्शन का समन्वय व पश्चिमी दर्शन में पूर्व के दर्शन का समन्वय करके व्यक्ति को भौतिक व अध्यात्मक दोनों प्रकार के सुख प्राप्त कर सकता है।

Radhakrishnan has given a very simple definition. He calls it Real Vedanta. He adds "The Neo-Vedanta is available to all regardless of caste, colour or race. Its practice does not require a person to have a male body and Brahmin birth or to live in seclusion in the forest

The traditional Vedanta argues that one who does not believe in God is an atheist. Neo -Vedanta says that one who does not believe in himself is an atheist. For it, both material and spiritual developments co exist and go together.

4. चौखम्भा राज्य की अवधारणा इस प्रकार है–

राम मनोहर जी का जन्म 23 मार्च, 1910 को उत्तर प्रदेश के अकबरपुर नामक स्थान पर हुआ था। आपके व्यक्तित्व पर गांधी जी का गहरा प्रभाव था। इसलिए आपने 10 वर्ष की आयु में असहयोग आंदोलन में भाग लिया। अंत में 12 अक्टूबर, 1967 को को आपकी मृत्यु हो गई। आपकी चौखम्भा राज्य की अवधारणा को निम्न. व्याख्या के द्वारा समझा जा सकता है–

राम मोहन लोहिया जी समाजवादी विचारक थे और वे समाजवाद के विशिष्ट स्वरूप की चर्चा करते थे। लोहिया जी का मानना था कि भारत की विशिष्ट परिस्थितियों को ध्यान में रखकर ही यहां के समाजवादियों को अपनी नीतियां विकसित करनी चाहिए, क्योंकि यहाँ की सभ्यता का विकास, सामंतवादी एवं सदियों पुराने निरंकुश तंत्र से हुआ है।लोहिया जी ने अपनी पुस्तक 'समाजवादी नीति के विविध पक्ष' में अपने समाजवादी मॉडल की विस्तृत व्याख्या की हैं। इनका मानना था कि किसी राष्ट्र का संगठन चार खंभा, गांव, मंडल, प्रांत तथा राष्ट्र के अनुसार होना चाहिए। तभी समुदाय का वास्तविक निर्माण संभव है। लोहिया ने राष्ट्र के 4 स्तमीों के निर्माण को चौखंभा राज्य कहा है। जिस प्रकार चार खंभ अपना पृथक–पृथक अस्तित्व बनाकर छत रूपी राज्य को संभालते है। ठीक उसी प्रकार यह व्यवस्था केन्द्रीकरण व विकेन्द्रीकरण की परस्पर

विरोधी अवस्थाओं में सामांजस्य स्थापित करेगी।

लोहिया जी के अनुसार– 'जिलाधीश का पर समाप्त कर देना चाहिए। क्यों वह शक्ति का केन्द्रीकरण है।'

पुलिस तथा प्रशासनिक निकाय को गांव एवं नगर पंचायतों के अनुसार कार्य करने चाहिए।

(4) Ram Manohar Lohia believes in decentralization of economic and political powers. For giving a solution to the malady of Indian administration, he gives the concept of Four-Pillar state which is based on the principle of division of powers. According to him Four-Pillar State constitutes four limbs of the State. They are the village, the district, the province and the centre with sovereign powers.

All these four limbs of the State will organically function. They will work interdependently. Sovereign powers must not reside alone in the centre and the federating units tut also with district and villages which are the primary political institutions where a group of men and women work for the interest of the whole community.

Thus Lohia considers that the greatest defect of Indian administration is the concentration of economic and political powers either in the centre or in the federating units. He suggests that there should be decentralization of political and economic powers in the four limbs of the Four-Pillar State.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

5. विवेकानंद जी के दरिद्रनारायण–

– आधुनिक वेदांती और युवाओं प्रेरणा स्त्रोत 19वीं सदी के भारत के प्रभावशाली चिंतक विवेकानंद जी का जन्म 12 जनवरी, 1863 को कलकत्ता में हुआ था, तथा मृत्यु 1902 में हुई।

आपके जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव आपके गुरू श्री रामकृष्ण परमहंस जी का था। इसलिए स्वामी जी अपने गुरू के समान ही ईश्वर या नारायण में विश्वास रखते थे तथा नारायण को प्रत्येक प्राणी की आत्मा तथा प्रत्येक वस्तु में देखते थे इसलिए आपका मानना था कि प्राणी की सेवा करना ही नारायण की सेवा है व ईश्वर प्राप्ति हेतु ईश्वर की पूजा तथा सेवा से कहीं अधिक यह कि मानवरूपी नारायण की सेवा की जाए जो लोक सुखी है उनकी अपेक्षा ऐसे लोगों की सेवा करना व सामर्थ्यवान बनना जो निर्धन है, असमर्थ है तथा जिन्हें आवश्यक है और ऐसे लोगों को स्वामी जी ने दरिद्र नारायण की उपाधि दी है। विवेकानंद स्पष्ट शब्दों में स्वीकार करते है कि ईश्वर वहीं है जो मनुष्य में समान रूप से व्याप्त है।

स्वामी जी के अनुसार, सभी व्यक्तियों को स्वतंत्र तथा समान रूप से सम्मानपूर्वक रहने के लिए सेवा भाव तथा उनके प्रति आदर की भावना होनी चाहिए इसी से निर्धनता तथा दरिद्रता दूर हो सकती है।

(5) Daridra Narayana or Daridranarayana or Daridra Narayan is an axiom enunciated by the late-19th century Indian sage Swami Vivekananda, espousing that service to the poor is equivalent in importance and piety to service to God. This exposition was a result of Vivekananda's wanderings in the country for two years, when he personally experienced the privation of the lower classes in the country.[1][2] Vivekananda then referred to feeding the poor as "Narayana Seva",[3] and preached for "Daridra Narayana Seva", meaning service to the poor as service to Narayana, the Vedic Supreme God.

Though the term was coined by Vivekananda, it was popularized by Mahatma Gandhi. Though the term was coined by Swami Vivekananda, it was popularized by Mahatma Gandhi,[9] Throughout his political career Gandhi worked for the betterment of poor and distressed people. He mainly preached about Satyagraha and Ahimsa but also pleaded for these poor people, the Daridra Naraynas

6. डॉ. बी.आर.अंबेडकर के आर्थिक विचार।

– अम्बेडकर जी ने अपनी पुस्तक The Problem of Rupee में अपने आर्थिक विचारों को व्यक्त करते है कि पूंजीवादी के अंतर्गत पूंजी का केन्द्रीकरण कुछ लोगों के हाथों में होता है, वह अपनी पूंजी की सहायता से मजदूर वर्ग का शोषण करता है और मजदूरों द्वारा जितना उत्पादन किया जाता है उनका वास्तविक लाभ उन्हें प्राप्त नहीं हो पाता है। अतः पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के स्थान पर समाजवादी अर्थव्यवस्था का समर्थन करते है और कहते है कि योग्यता के आधार पर सभी व्यक्तियों को कार्य उपलब्ध कराने चाहिए।

आर्थिक विचारों में कृषि को उद्योगों के रूप में स्थापित करने की बात कही है। आपके विचारों के अनुसार कृषि योग्यभूमि को सरकार को अपने संरक्षण में ले लेना चाहिए तथा भूमि मालिकों को उसका उचित मुआवजा उपलब्ध कराना चाहिए तथा राज्य की सम्पूर्ण भूमि को

(6) Bharat Ratna Dr. B. R. Ambedkar was dynamic person in Indian history. He wrote three scholarly books and many papers on economics. Indian economy is mixed economy and have impact of changes in social, political and economical changes before and after independence. He represented problem of physical and economical exploitation of rural poor through his movements. Dr. Ambedkar has given new socio and political view to Indian economics. Dr. Ambedkar decided to "changeover from economics to law and politics" He argued for fixed gold standard for exchange rate. He told that low exchange rate increases exports and boosts internal prices. In the age of global market vision 20-20 mostly contain his economical thoughts. The economically use of public funds and its proper utilisation for planned objectives can be growth the economy of nation.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

सरकार की देखरेख व संरक्षण में होनी चाहिए, जिके लिए कुछ निम्न. बिन्दुओं को स्पष्ट करते है–

(i) सामूहिक कृषि सरकार के निर्देशों के अनुसार हो।

(ii) जाति तथा धर्म का भेदभाव किये बिना ग्रामीणों में भूमि का इस प्रकार वितरण करना चाहिए कि कोई जमींदार हो न आसानी और नह ही मजदूर हो।

(iii) सामूहिक कृषि के लिए सरकार द्वारा सिंचाई व्यवस्था उपलब्ध करवाई जाये, जिससे कि अधिक से

अधिक भूमि को कृषि योग्य बनाया जा सके।

(iv) सरकार द्वारा कृषकों को उन्नत बीज तथा खाद् उपलब्ध करवाया जाये, जिससे कि उत्पादन में बढ़ोतरी हो।

(v) सरकार द्वारा कृषकों को ऋण उपलब्ध करवाया जाये।

अतः कृषि को आत्मनिर्भर बनाने जिससे कि देश आत्मनिर्भर हो सकें के प्रयास किये जाए।

7. गांधी जी के रामराज्य की संकल्पना–

– गांधी जी अराजकतावादी विचार है और यह धारणा इनके राज्य संबंधी विचारों से स्पष्ट होती है। गांधी जी अपने आदर्श रूप में राज्य के अस्तित्व का निषेध करते है औरा राज्यों को दो कारणों से बुरा मानते है–

1. राज्य में सेना व पुलिस के सहारे कानून व व्यवस्थाओं को लागू किया जो कि अहिंसा के ठीक विपरीत है।

2. राज्य अनिवार्य रूप से ऐसे कानून बनायेगा जो सभी व्यक्तियों को एक जैसे ढाँचे में बनाते है, जिससे व्यक्तियों की स्वतंत्रता बाधित होती है।

गांधी जी अपनी इस अराजकतावादी या राज्यविहीन स्थिति तक पहुँचने के लिए अहिंसा को अपनाते है, क्योंकि इनका मानना है कि लक्ष्य के साथ–साथ

साधनों की भी पवित्रता आवश्यक हैं, लेकिन प्रश्न यह है कि राज्य नहीं होगा, तो सामाजिक व्यवस्थाएं कैसे चलेगी? इसके उत्तर में गांधी जी कहते है कि हर व्यक्ति उच्च नैतिक स्तर पर जीयेगा। हर व्यक्ति की आर्थिक जरूरतें संतुष्ट होगी और नैतिकता का विकास पर्याप्त होगा तो अपराध होंगे ही नहीं। यदि छोटे–मोटे अपराध होते भी है तो सामाजिक नैतिक दबाव ही काफी है।

गांधी जी जानते थे कि अराजकतावादी आदर्श उपलब्ध होना आसान नहीं है, लेकिन उन्हें विश्वास है कि

(7) Whether we consider the Ramayana as history or mythology, it cannot be denied that the concept of Ram Rajya is an integral part of our cultural inheritance. Writing in 'Young India' (September 19, 1929), Gandhiji had said: "By Ram Rajya I do not mean Hindu Raj. I mean Ram Raj, the kingdom of God. For me, Ram and Rahim are one and the same; I acknowledge no other God than the one God of Truth and righteousness. Whether Ram of my imagination ever lived on this earth, the ancient ideal of the Ramayana is undoubtedly one of true democracy in which the meanest citizen could be sure of swift justice without an elaborate and costly procedure." In the Amrit Bazar Patrika of August 2, 1934, he said: "Ramayana of my dreams ensures equal rights to both prince and pauper." According to him, the ideal Ram Rajya may be politically described as 'the land of dharma and a realm of peace, harmony and happiness for young and old, high and low, all creatures and the earth itself, in recognition of a shared universal consciousness

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY INDORE

रामराज्य अराजकतावाद आयेगा, पर कब और कैसे ये दावा नहीं करते है, जब तक रामराज्य नहीं आता तब तक उन्होंने नैतिक राजव्यवस्था के सूत्र दिये है जो निम्न. है–

1. राज्य की शक्तियां जितनी कम हो उतना बेहतर है
2. लोकतंत्र का समर्थन करते है।
3. सत्ता का स्थानांतरण नीचे एवं ऊपर की और होना चाहिए।
4. गांधी लोकल्याणकारी राज्य का कभी भी उत्साहपूर्वक समर्थन नहीं करते थे, क्योंकि लोककल्याण के नाम पर राज्य की शक्तियां बढ़ जायेगी और व्यक्तियों की स्वतंत्रता बाधित होगी।

8. सांवेगिक बुद्धि एवं उसके आयाम–

– संवेगो से आशय, मनुष्य के हृदय में उठने वाले उन भावों से है जो मनुष्य के कार्य व्यवहार को प्रभावित करते है। जैसे– प्रेम, करूणा, घृणा, दया, प्रतिबद्धता इत्यादि।

इन्हीं संवेगो को पहचान कर सकारात्मक दिशा में अभिप्रेरित करने की शक्ति को सांवेगिक बुद्धि कहा जाता है। इतना ही नहीं बल्कि दूसरो के संवेगों को पहचान कर सकारात्मक दिशा में अभिप्रेरित करना सांवेगिक बुद्धि के अंतर्गत आता हैं।

सांवेगिक बुद्धि को और अधिक स्पष्ट करने के लिए इसके चार आयाम निम्न है–

1. **सामाजिक जागरूकता**– इसके अंतर्गत कोई व्यक्ति समाज की अवधारणाओं तथा संवेगों को समझता है तथा बिना कहें लोगों की आंतरिक संवेदनायें परख कर उनके प्रति सहायता का भाव रखता है।

2. **स्वजागरूकता**– इसके अंतर्गत व्यक्ति स्वयं की भावनाओं संवेदनाओं को पहचानता है और इसी अवयव के कारण भावनात्मक परिपक्वता आती है और निर्णय लेने में आसानी होती है।

3. **आत्मप्रेरणा**– इसके अंतर्गत व्यक्ति स्वयं के लक्ष्यों के प्रति अपने आप को प्रेरित करता है और आत्म प्रेरणा से ही प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल बना लेता है।

4. **आत्म प्रबंधन**– इसके अंतर्गत व्यक्ति स्वयं के संवेगों पर नियंत्रण करके उनका उचित प्रयोग करता है तथा दूसरों के संवेगों को पहचानकार उनहें भी नियंत्रित करता है।

(8) Emotional intelligence refers to the ability to identify and manage one's own emotions, as well as the emotions of others. Though there is some disagreement among psychologists as to what constitutes true emotional intelligence, it is generally said to include at least three skills: emotional awareness, or the ability to identify and name one's own emotions; the ability to harness those emotions and apply them to tasks like thinking and problem solving; and the ability to manage emotions, which includes both regulating one's own emotions when necessary and cheering up or calming down other people.

There are basically four dimensions of Emotional Intelligence

1.Social Awareness

2. Self Awareness

3.Internal Inspiration

4.Internal Management

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

अतः सांवेगिक बुद्धि व्यक्ति तथा प्रशासिनक स्तर पर बहुत ही महत्वपूर्ण अवयव है जो कि किसी व्यक्ति को प्रश्नचित्त तथा अनुक्रियाशील बनाता है।

9. मनोवृत्ति के निर्माण में रूचि का महत्व–

– किसी विशेष क्रिया एवं वस्तु के प्रति विशेष लगाव या आकर्षण के कारण सकारात्मक दृष्टिकोण निर्मित करना ही रूचि कहलाती है।

मैक्डूगल के अनुसार, ''रूचि दिया हुआ अवधान है, और अवधान रूचि का क्रियात्मक रूप है।''

रॉश के अनुसार, ''जो वस्तुएं हमारे साथ अत्यधिक संबंधित होती है, उसी वस्तु के प्रति विशेष लगाव को रूचि कहते है।''

यदि रूचि का क्षेत्र मनोवृत्ति से छोटा होता है, अध्ययन के उपरांत यह देखा गया कि मनुष्य जिन क्रियाओं व वसतुओं के प्रति विशेष लगाव रखता है वह उन वस्तुओं के लिए हमेशा सक्रिय बना रहता है, और रूचि स्थायी होकर मनोवृत्ति में परिवर्तित हो जाती है। अर्थात् मनोवृत्ति के 3 तत्व (संज्ञानात्मक, भावनात्मक व क्रियात्मक) में से भावनात्मक पक्ष से रूचि अत्यधिक संबंधित होती है जो कि क्रिया की तत्परता को प्रदर्शित करती है। जिससे कि किसी क्रिया या वस्तु के प्रति निरंतर सक्रिय रहने के कारा सकारात्मक मनोवृत्ति निर्मित हो जाती है।

अतः कहा जा सकता है कि मनोवृत्ति के परिवर्तन में, रूचि अत्यधिक महत्वपूर्ण तत्व है।

10. आचरण संहिता एवं इसकी प्रशासन में उपयोगिता–

- **परिभाषा**– स्वीकृत और अस्वीकृत व्यवहार तथा कार्यवाही की सूचि को आचरण संहिता कहते है। आचरण संहिता नियमों का एक ऐसा समुच्य है जो किसी सेवक या पदाधिकारी को जिम्मेदारी से युक्त बनाता हैं तथा समस्त नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का संचार भी करता है।

आचरण संहिता की उपयोगिता निम्न है–

1. आचरण संहिता ही विभिन्न विभागों के कार्यो का स्पष्ट विभाजन करती है जिससे कि–लोकसेवक अपने कार्यो को पूर्ण कर पाता है।

2. नैतिक मूल्यों का किस स्थान पर कितना और कब प्रयोग अपने व्यवहार में करना है इसका भी नियंत्रण आचरण संहिता द्वारा ही किया जाता हैं।

(9) Feeling of wanting to give your attention to some thing or of wanting to be involved with and to discover more about some thing is known as interest

- According to Rosh 'the things which are very intimately related to as and we have a special attachment to them they are known as our interest.

- The field of interest is narrower then the field of Attitude. After research it has been concluded that if a person has a special attachment to a particular action then he is always attentive towards it and that interest becomes permanent and turns in to Attitude

Out of the three elements of atitude (cognitive, emotional, and functional) interest in most closely related to the emotional aspect with displays our readyness to take a particular action. If we have a positive Attitude continously towards a particular action then we create a positive attitude towards it.

Therefore, it can be said that in the transformation of Attitude, interest is an extremely important element.

(10) The definition of a code of conduct is a collection of rules and regulations that include what is and is not acceptable or expected behavior.

- "Principles, values, standards, or rules of behaviour that guide the decisions, procedures and systems of an organization in a way that (a) contributes to the welfare of its key stakeholders, and (b) respects the rights of all constituents affected by its operations."

Importance of code of conduct

1. Code of conduct is a clear division of the functions of different departments, so that the public servant can fulfill their tasks.

2. The code of conduct also controls the moral values of the public servant.

3. While doing the work of the public servant, different types of discretionary powers are received.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

3. लोकसेवकों के कार्य करते समय, विभिन्न प्रकार की विवेकाधीन शक्तियां प्राप्त होती है। तथा इन विवेकाधीन शक्तियों को सकारात्मक दिशा तथा नियंत्रण करने के लिये आचरण संहिता आवश्यक है।

4. किसी सार्वजनिक पद पर आसीन पदाधिकारी को आचरण संहिता के द्वारा वैधानिक रूप से किसी कार्य के लिये जवाबदेही ठहराया जा सकता है।

11. नैतिक मूल्य के पतन के कारण–

– नैतिक मूल्य वे मूल्य होते है, जिसके आधार पर किसी कार्य के शुभ या अशुभ तथा सही या गलत होने का मूल्यांकन किया जाता है। यथा– सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व इत्यादि।

प्रशासन में नैतिम मूल्य के पतन से विभिन्न प्रकार की समस्याएं जन्म ले रही है, जिससे कि सरकार अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में असमर्थ हो रही है।

इसके पतन के कारणों को निम्न. बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

1. **प्रतिबद्धता में परिवर्तन**– वर्तमान नौकरशाही व्यवस्था में व्यक्ति देश की अपेक्षा परिवार के प्रति अधिक प्रतिबद्ध है, और व्यक्ति के द्वारा जो भी कार्य किये जाते हैं, उनका उसको कोई लाभ नहीं होता लेकिन नैतिकता के विरूद्ध जाकर किए जाते है।

2. **राजनीति का हस्तक्षेप**– प्रशासन में अनावश्यक रूप से राजनीति व राजनेताओं के हस्तक्षेप से नैतिक मूल्यों में गिरावट देखने को मिल रही है तथा राजनेता और अधिकारी साठ–गांठ करके विभिन्न प्रकार के भ्रष्टाचार को अंजाम दे रहे है।

3. **सतत निरीक्षण का अभाव**– वर्तमान लोक प्रशासन में सतत निरीक्षण का अभाव है, जिस कारण प्रशासकों में अनेक प्रकार की विसंगतियां देखने को मिलती है। हांलाकि निरीक्षण की व्यवस्था की गई है। लेकिन सतत् व लगातार होने वाले निरीक्षण का अभाव है।

4. **भौतिकतावादी विचारधारा**– वर्तमान जीवन शैली सरल व सादगीपूर्ण जीवन शैली के विपरीत है। भौतिक सूख सुविधाएं हेतु व्यक्ति को अधिक धन की आवश्यकता होती है।जिस कारण प्रशासक नैतिक मूल्यों की अनदेखी करता है।

अतः अनेकानेक कारण है जिससे कि प्रशासन में नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। जैसे– स्व–विवेक की शक्तियां होना, शक्ति का केन्द्रीकरण होना, सामाजिक दृष्टिकोण, दिखावे वाली जीवन शैली होना इत्यादि।

And the Code of Conduct is necessary for the positive direction and control of these discretionary powers.

4. Appointing officer of any public office can be held accountable if he vilolates the Code of Conduct.

(11) Ethical values are those values, on the basis of which a work is evaluated as right or wrong. Such as: Integrity, Transparency, Accountability etc.

Different types of problems are being created due to the decline of ethical value in the administration, so that the government is unable to achieve its goals.

The decline in moral values can be attributed to the following factors

1. Change in commitment - In the current bureaucratic system, the person is more committed to the family than the country,

2. Political Interference- In administration there is unnecessary interference of politicians. And this is seen as a reson for decline in ethical values.

3. Lack of continuous inspection - There is a lack of continuous inspection in the current public administration, which is why many types of discrepancies are seen in the administrators.

4. Materialistic ideology- The current life style of people encourages materialism. In order to live a luxurious lifestyle a person needs more money. There fore some times a public servant indulges in curruption.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
INDORE

12. नैतिक मूल्यों को स्थापित करने के उपाय–

– नैतिक मूल्य वे मूल्य होते है जिसके आधार पर किसी के कार्यो के सही गलत का मूल्यांकन किया जा सकता है।

वर्तमान में प्रशासन में नैतिक मूल्यों के पतन को देखते हुए तथा भ्रष्टाचार के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए नैतिक मूल्यों को स्थापित करना महत्वपूर्ण हो गया।

इसके लिए निम्न. प्रयास किए जा सकते है–

1. **आचरण संहिता में सम्मिलित करके**– नैतिक मूल्यों की बाध्यता को प्रदर्शित करने के लिए नैतिक सिद्धांतों को आरचरण संहिता में सम्मिलित कर देना चाहिए, जिससे कि लोक सेवक बाध्यता से इसका पालन करें।

2. **प्रशिक्षण में शामिल करके–** चयन के समय और चयन के बाद प्रशासक को नैतिक सिद्धांतों के संबंधित प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाए। जैसे वर्तमान में लाल बहादुर शास्त्री प्रशिक्षण केन्द्र, मसूरी में संवेदना के नाम से की गई है।

3. **अनिवार्य विषय के रूप में–** 1999 में गठित एस. वी. चौहान समिति ने यह सिफारिश दी थी कि, नैतिक सिद्धांतों को अनिवार्य विषय के रूप में लागू कर दिया जाए, जिससे कि नैतिक सिद्धांतों को आचरण में उतारा जा सकें।

4. **कठोर कानून का निर्माण करके–** निष्ठा की कमी का सबसे बड़ा करण यह है कि, वर्तमान में कठोर कानून का अभाव है। इसलिए कठोर कानूनों का निर्माण करके निष्ठा को बढ़ाया जा सकें।

अतः उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि, नैतिक सिद्धांत लोक प्रशासन एवं आचरण के लिए प्राण के समान हैं। इसलिए इसे स्थापित करना आवश्यक है।

(12) Ethical values are those values on which right or wrong action can be evaluated.

Given the collapse of ethical values in the administration and in view of the increasing incidences of corruption, it has become important to establish ethical values.

The following Efforts can be made to establish moral values -

1. **By incorporating the Code of Conduct**- To demonstrate the importance of moral values, ethical principles should be included in the Code of Conduct, so that the public servants comply with it.
2. **By proper training -** After the selection and the administrator will be provided with relevant training regarding ethical principles. At present, the Lal Bahadur Shastri Training Center, in Mussoorie has been doing the same function.
3. **In the form of compulsory subject-** SV Chouhan committee formed in 1999. Recommended that moral principles be applied as a compulsory subject, so that the ethical principles can be established at a young age.
4. **By creating harsh law-** The biggest reason for the lack of integrity is that there is a lack of strict law at present. Therefore, ethical behaviour can be increased by creating strict laws.

Therefore, it is clear from the above description that, moral principles are the essence of public administration and therefore it is very important to establish them.

13. भ्रष्टाचार को अल्पतम करने में मीडिया की भूमिका–

– भ्रष्टाचार का अर्थ है– भ्रष्ट या लगत आचरण अर्थात् सामाजिक, मानवीय तथा कानूनी मानको के विपरीत कार्य करना ही भ्रष्टाचार कहलाता है। इसे अल्पतम करने में मीडिया की भूमिका को निम्न. व्याख्या द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

भ्रष्टाचार को समापत करने के लिये सूचना तंत्र एक प्रभावी उपाय है। जिससे कि सरकार के कार्यो में

13. The role of the media is critical in promoting good governance and controlling corruption. It not only raises public awareness about corruption, its causes, consequences and possible remedies but also investigates and reports incidences of corruption. The effectiveness of the media, in turn, depends on access to information and freedom of expression, as well as a professional and ethical cadre of investi-gative journalists. This paper examines how the media have exposed corrupt officials, prompted investigations by official bodies, reinforced the work and legitimacy of both parliaments and their anti-corruption bod-

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY INDORE

पारदर्शिता आयेगी और लोकसेवकों पर दबाव निर्मित होगा। जिससे कि– भ्रष्टाचार को नियंत्रित किया जा सकता है। प्रशासनिक कार्यवाही सूचना तंत्र को विकसित करने का प्रथम प्रयास सिटिजन चार्टर के रूप में किया गया। सिटीजन चार्टर प्रत्येक विभाग की दीवार पर लगे ऐसे घोषणापत्र होते है। जिसमें उस विभाग से संबंधित कार्य व अधिकारियों का वर्णन होता है, जिसके आधार पर हम किसी भी अधिकारी को उससे संबंधित कार्य के लिये उत्तरदायी ठहरा सकते है।

सूचनातंत्र को विकसित करने का दूसरा उपायें ई–गवर्नेंस के रूप में दिखाई देता हैं जिसके माध्यम से सरकार अपने कार्यो को आधुनिक तकनीकी के द्वारा कम्प्यूटराइज करके सूचना तंत्र को विकसित कर रहा है और तकनीकी क्षेत्र से जुड़े हुये व्यक्ति आसानी से सरकारी कामों की जानकारी प्राप्त कर सकते है।

सूचनातंत्र को विकसित करने में तीसरा तथा सबसे महत्वपूर्ण प्रयास 'सूचना का अधिकार–2005' है।

सूचना के अधिकार 2005 के अनुसार कोई भी

साधारण व्यक्ति किसी भी कार्यलय या विभाग से न्यूनतम शुल्क पर 30 दिनों के भीतर सूचना प्राप्त कर सकता हैं और यह प्रत्येक व्यक्ति का वैधानिक अधिकार होगा।

यदि 30 दिन के भीतर कोई भी कार्यालय या विभाग सूचना उपलब्ध नहीं करवा पाता तो उसके लिए दण्डात्मक प्रावधान भी किये गये है।

अतः भ्रष्टाचार को अल्पतम करने में लोकतंत्र का चौथा स्तमी सूचनातंत्र तथा मीडिया अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है।

ies and pressured for change to laws and regulations that create a climate favorable to corruption. The paper considers, too, how the media can be strengthened, highlighting private versus public owner-ship, the need for improved protection of journalists who investigate corruption, press freedom and media accountability.

14. समर्पण की भावना–

– समर्पण का अर्थ होता है, सामाजिक व राज्य के उद्देश्यों के प्रति प्रतिबद्धता की ऊँची तीव्रता वाली मनोस्थिति। यह मनोस्थिति उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये तीव्र भावनायें की पैदा करती है जो व्यक्ति के व्यवहारों में दिखाई देती है।

तत्पर्य यह है कि– जब लोकसेवकों की अंतर्रात्मा उसको प्रेरणा प्रदान करने लगे तो उसे समर्पण की उच्च स्थिति कहा जाता है।

समर्पण से मुक्त प्रशासक के द्वारा अपने आप को व अपने कार्यो को जनकल्याण एवं राष्ट्रीय विकास हेतु समर्पित कर देता हैं।

14. Dedication means, the high level of commitment to social and state objectives. Dedication is an intense emotion and is necessary to achieve the objectives of a person.

A dedicated person he dedicates himself and his work to the welfare of people and national development as an administrator.

1. The administrator with dedication will always be honest towards his work and the work will be intensified.
2. If the Public Administrator is equipped with a sense of dedication, then the administration will become more efficient and the confidence on public institutions will increase.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY INDORE

प्रशासन में समर्पण एक उच्च गुण है जो कि, लोकसेवक के व्यवहार से प्रदर्शित होती है। जिसे हम निम्न. बिन्दुओं द्वारा समझ सकते है–

1. समर्पण से युक्त प्रशासक हमेशा अपने कार्य के प्रति ईमानदार रहेगा और प्रदत्त कार्यो में तीव्रता आएगी।
2. लोक प्रशासक यदि समर्पण की भावना से युक्त होगा तो प्रशासन अधिक जनोन्मुखी बनेगा और जनता का प्रशासन पर विश्वास बढ़ेगा।
3. समर्पण से युक्त प्रशासक अपने कार्यो को उस रूप में संपादित करेगा जिससे की वंचित वर्गो को व अशक्त वर्गो को अधिक से अधिक लाभ पहुंचेगा।

अतः समर्पण एक उच्च गुण है जो कि, उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट होता है। इसी गुण से प्रशासन अपने लक्ष्यों को प्राप्त करती है।

15. अन्तः प्रेरणा की भूमिका–

– किसी प्रकरण विशेष के संदर्भ में जब लोक सेवके के समक्ष एक से अधिक नैतिक तर्क उपस्थित होते है तो किस नैतिक तर्क को चुने व किसके अनुसार कार्य करें इसी दुविधा को नैतिक दुविधा या विवेक का संकट कहा जाता है।

अतः प्रशासकों से यह आशा की जाती है कि दुविधा का समाधान करते समय उचित विकल्पों का चयन करें।

नैतिक दुविधा की स्थिति में अंतर्रात्मका नैतिक मार्गदर्शन का महत्वपूर्ण अवयव है। जिसे निम्न व्याख्या से समझा जा सकता है–

अंतर्रात्मा नैतिक मार्गदर्शन का आंतरिक स्त्रोत होता है जब प्रशासक के समक्ष एक से अधिक नैतिक तर्क उपस्थित होते है तो उचित नैतिक तर्क का चयन वह अपने हृदय की आवाज सुनकर करता है तो उसे अंतर्रात्मा कहा जाता है।

इसके आधार पर निम्न प्रकार से समाधान किया जा सकता है–

1. अंतर्रात्मा का निर्माण,शिक्षा, पारिवारिक जीवन संस्कार इत्यादि के आधार पर होता है।अंतः इसके आधार पर स्पष्ट निर्णय लेकर प्रशासन को समाजउन्मुखी बनाया जा सकता है।

2. अंतर्रात्मा के द्वारा ही प्रशासक को नैतिक दुविधा की स्थिति में निर्णय लेने में सरलता होती हैं

3. अंतर्रात्मा के द्वारा निर्णय क्षमता तीव्र होती हैं, और प्रशासन को अधिक पारदर्शी बनाया जा सकता है।

3. The administrator with dedication will work in such a way that the benefits will which to disadvantaged sections and the weaker sections.

Therefore dedication is a high quality which is clear on the basis of the above points. With this quality the administration can achieve his goals.

15. When there is more than one moral argument in front of a public servant in the context of a particular episode, this dilemma is called moral dilemma or crisis of discrimination.

Therefore, administrators are expected to select the appropriate option when resolving the dilemma.

In the case of moral dilemma, conscience is an important component of moral guidance. Which can be understood by the following interpretation-

Conscience is the internal source of moral guidance when there is more than one moral argument present in the presence of the administrator, then he chooses the proper moral argument after listening to the voice of his heart, then it is called conscience.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY INDORE